अंतरा-शब्दशक्ति

मुस्कुराते रहो

काव्य संग्रह

कविता अग्रवाल

मुस्कुराते रहे

(काव्य संग्रह)

कविता अग्रवाल

अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-61-2

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या) ०७६३३-२५३१५९ मो ९४२४७६५२५९

अणुडाक -antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ © कविता अग्रवाल

मूल्य: ४०.०० रुपये

आवरण चित्र : संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

'Muskurate Raho' by 'Kavita Agrawal'

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं |प्रस्तृत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत : प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं| प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं

भूमिका

महाविद्यालयीन प्राध्यापक के दायित्व व पारिवारिक कर्तव्यों के निर्वाह के अतिरिक्त एक प्राध्यापक का समाज के प्रति भी दायित्व होता है। परिस्थितिवष एवं चिंतनवष कई विचार ऐसे उत्पन्न होते हैं जिन्हें अभिव्यक्त करने की ललक जाग्रत हो जाती है। यद्यपि समयाभाव या विचारों के प्रवाह में बिखरन के कारण कई विचार लेखनी तक नहीं आ पाते है, किन्तु कुछ भाव इतने प्रबल व स्पष्ट होते हैं कि वे अपनी अभिव्यक्ति का मार्ग ढूँढ ही लेते हैं। अभिव्यक्ति की आवष्यकता विषेष रूप से तब अधिक लगने लगती है जब ऐसा प्रतीत होता है कि ये विचार हमारी संस्कृति, हमारी वर्तमान परिस्थिति या कोई समाधान को व्यक्त करते हुए कई व्यक्तियों को रोचक या उपयोगी सिद्ध हो सकेंगे।

संभवतया यही मनोस्थिति मेरी रही होगी जिसका परिणाम यह हुआ कि यदा-कदा कुछ लघु कविताओं का सृजन पिछले कुछ महीनों से होता रहा।

इस संकलन में एक पाठक को भारतीय त्यौहारों की झलक, भगवद्गीता, पर्यूषण, आत्मबल, जीवन जीने की कला, अध्यात्म, समभाव, आधुनिकता के कुछ चित्र, दिल और दिमाग के संतुलन की आवष्यकता, मानवीय संबंधो आदि की झलकियाँ हलके-फुलके शब्दों में इस पुस्तिका से प्राप्त हो सकेगी।

मैं आशा करती हूँ कि आप इसे पढ़कर सुखद शांति के क्षणों में प्रवेष कर सकेगें।

अंत में मैं हृदय से आभारी हूँ मेरे परिजनों एवं मित्रगणों की, जिनकी शुभकामनाओं एवं प्रोत्साहन के कारण मैं यह लेखन कर पाई तथा इसे पुस्तक रूप में बदलने के लिए अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाषन एवं डा. प्रीति सुराना को कोटिश धन्यवाद।

परम्पिता परमेश्वर को नमन एवं आप सभी को शुभकामनाओं के साथ।

-कविता अग्रवाल

अनुक्रमणिका

1. लहरें और लम्हे	5
2. मैं कौन हूँ ?	6
3. जंग	7
4. लम्हे	8
5. माँ	9
6. मुस्कुराते रहो	10
7. मित्रता	11
8. प्रतिकार	12
9. मैं और मेरा..	13
10. दिनकर और दीवाली	14
11. मकर संक्राति	15
12. होली	16

लहरें और लम्हे

लहरें और लम्हे
जो एक पल में आती है,
और इक पल में चली जाती है,
वो लहरें भी तट पर निशा छोड़ जाती है।
यूँ ही लम्हे आते हैं चले जाते हैं,
और कुछ न कुछ दे जाते हैं।
हमें क्या मिलेगा अगले लम्हे में,
इसका बीज छिपा है हमारे जज्बे में।
ना हो तू परेशा गम के लम्हे में,
ना ही कर अभिमान सुख के पल में।
बस रख ले तू ये ध्यान अपने मन में,
कि रखना है समभाव दोनों पल में,
यही कहा है कृष्ण ने गीता के वचन में।

दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः।
वीतराग भय क्रोधः स्थितधीर्मुनिरूच्यते।।

मैं कौन हूँ ?

जो मैं हूँ उसे ही मैं नहीं जानती,
जो मैं नहीं उसे ही मैं, मैं मानती।
मैं हूँ माँ, मैं हूँ बेटी, मैं ही इनकी रानी हूँ।
मैं हूँ सुन्दर, मैं हूँ ज्ञानी, मैं तो पैसे वाली हूँ।
कुछ रिश्ते काया से हैं,
तो कुछ रिश्ते माया से हैं।
काया को सँवारना,
माया को सँभालना।
यह सब मुझको आता है।
पर कौन हूँ मैं और कैसा मेरा आत्म,
बस यही समझ नहीं आता है।
पर को मानकर मैंने अपना,
पूरा समय गँवाया है।
पर में ही दिन रात विचार कर,
सुख-चैन सभी गँवाया है।
जो तू है, वो ही मैं हूँ,
जो मैं हूँ वो ही तू है
ना कोई कुछ मेरा करता,
ना मैं पर का कर्ता-धर्ता
मैं तो बस इस आत्म हूँ,
मैं आनंद का सागर हूँ
आता है पर्यूषण पर्व यही हमें बताने को
कब जागेगा ओ प्यारे चेतन
मोह नींद में सोने वालों को।

जंग

छिड़ी हुई है दोनों मे कई दिनों से जंग,
दोनों के ही जीने के हैं अपने-अपने ढ़ंग।
एक की सुनो तो दूजा रूठ जाता है,
दूजे की मानो तो पहला टूट जाता है।
एक देता है ज्ञान और उपदेश,
ते दूजा रंग भरता है बन कर इक रंगरेज।
एक धरातल से जोड़ता है,
तो दूजा सपनों से जोड़ता है।
एक गुणा-भाग कर तोलता है,
तो दूजा कुछ भी नहीं सोचता है।
एक कह रहा है ना सोच तू ऐसी बात,
तो दूजे को बस प्यारी लागे वो ही बात।
एक कर रहा है इन्कार, तो दूजा कर रहा है इकरार।
एक कह रहा ना हो तू बेकरार,
तो दूजे को लगता बिन उसके जीवन बेकार।
दोनों ही दे रहे हैं अपनी-अपनी दलील,
लड़ रहे हैं ऐसे जैसे कोर्ट में दो वकील।
दोनों की दलीलों में है बहुत ही दम,
दोनों की ही अहमियत है ना कोई किसी से कम।
इनकी यह जंग जाने कब सुलझेगी,
पर आपकी गलतफहमी तो आज ही सुलझेगी।
इस जंग के बताओ हैं कौन-कौन किरदार?
क्या कहा? मिया-बीबी ना-ना,
मिया-बीबी नहीं लड़ रहे हैं यार
यह जंग है दिल और दिमाग की,
किसकी मैं मानूँ, दो राय मुझे आपकी।

लम्हे

कुछ लम्हे
यादों में बस जाते हैं,

तो कुछ लम्हे
यादों से बिसर जाते हैं।

कुछ लम्हे देते हैं खुशी
कुछ दे जाते हैं गम,

क्या कीजिये आप
और क्या कीजिये हम?

जिन्दगी देती है नित नए रंग,
हँस कर गुजारिये जीवन इनके संग।

माँ

मेरे रोने पर जब आप मुस्कुराई थी,
मेरे आने की आहट तब आपने पाई थी,
मेरे हर दर्द पर फिर आपकी आँखें डबडबाई थी।
अपनी ममता की छाँव में मेरी दुनिया आपने सजाई है,
माँ के इस कर्ज की ना कभी कोई भरपाई है।
मेरे अवचेतन मन में माँ बस आप ही समाई हैं
तभी तो हर पीड़ा में बस आप ही याद आई हैं।
देखती हूँ जब भी कोई बुरा ख्वाब
तो निकलता है 'ओ माँ' मुँह से अपने आप।
आपके अँगना को छोड़ बीत जाये चाहे दशक
पर उस छाँव की सदा रहती है मन में कसक।
मायके की आत्मा है माँ
आतुर है मन जाने को वहाँ
क्यूँकि रहती है वहाँ मेरी प्यारी माँ।
हर थकान हर शिकन हो जाती है हवा
रखती हूँ जब सर आपकी गोद में मैं माँ ।
एक अनवरत प्यार का आपसे बहता है झरना
है ईश्वर का वरदान माँ आप और क्या कहना।

मुस्कुराते रहो

हमने उनसे कहा...
दूर रहकर,
कहते हो मुस्कुराओ
गम देकर
कहते हो भूल जाओ।
इतना तो न करो,
सितम हम पर
आँसू देकर
तो न कहो खिलखिलाओ।
वो कहते हैं
रहता हूँ दूर,
ताकि याद करो।
मिलने का
तुम इंतज़ार करो।
यादों से चुरा लो,
कुछ हसीन पल
और उन पलों से सजा लो,
तुम मुस्कान हर पल।।

मित्रता

कुछ पद पाकर
मित्रता भूल जाते हैं,
कुछ मित्र पाकर
पद को भूल जाते हैं।

कुछ पद को देखकर
मित्रता बढ़ाते हैं,
कुछ पद को देखकर
दूरियाँ बनाते हैं।

कुछ के लिए रिश्ते ही
खास होते हैं,
कुछ के खास से ही
रिश्ते होते हैं।

जो साथ देते हैं
वो ही साथी होते हैं,
जो साथ छोड़ देते हैं,
वो स्वार्थी होते हैं।

प्रतिकार

कभी सोचूँ प्रतिकार करूँ,
कभी सोचूँ हाहाकार करूँ,
कभी सोचूँ चीत्कार करूँ।
पर ना मैं करती प्रतिकार
ना मैं करती हाहाकार
चुप रहकर करती मैं स्वीकार
जो करते हैं हमसे प्यार, उनको है गुस्से का अधिकार
गुस्से को मानकर उनका प्यार
उनकी बेरूखी करती स्वीकार।
ना उठाते हैं वो हाथ, ना ही कहते गंदी बात
फिर भी उनके क्रोध का, करा देते वो आभास
और हर बिगड़ी बात का, रखते मेरे सिर पर ताज।
क्या उठाऊँ मैं अपनी आवाज
या कर दूं सब कुछ नजरअंदाज
जब से देखी है 'सीक्रेट सुपरस्टार'
मन में उठ रहा है ज्वार, सोचती हूँ निकाल दूँ अपना गुबार
पर जब देखती हूँ 'आस्था' और 'संस्कार'
तो बदल जाते हैं मन के विचार
प्रारब्ध मेरा मानकर सह लेती हूँ हर बार।
क्यूँ हो मेरी खुशियाँ उन पर निर्भर
क्यूँ मैं बनाऊँ जीवन मेरा दूभर,
बनना है मुझको मजबूत
और अपनी मजबूती का देना है सबूत
चाहे बैरी हो जावे ये जमाना
मुझे तो सदा हँसते हुए है जीवन बिताना।

मैं और मेरा......

यूँ अचानक कहाँ चले गए, करके मेरी दुनिया वीरान
कितनी हूँ मैं परेशान, नहीं है तुमको इसका भान।
तुम में ही बसती थी हज़ारों यादें
वो मीठी मीठी बातें, वो अनगिनत सौगातें।
वो भाभी के संग होली, वो घर में सजी रंगोली
वो बनारस के घाट, वो दिल्ली का हाट
वो आधी रात और आसमाँ में चाँद आधा
तुम संग हो जाती थी सारी यादें ताजा।
मेरे हाथ तुम्ही से सजते थे
मेरे नैन भी तुम्ही में अटकते थे।
पर अब ना तुम हो ना तुम्हारा साया
क्यूँ मुझ पर डाली तुमने गहरी छाया?
तुम्हारे बिन हो रहे बैचेन
तुम ले गए संग मेरे दिल का चैन
जाने कैसी थी वो अशुभ घड़ी
जो उस बैरी की नजर तुम पर पड़ी
मेरी नजरें बचाकर उसने तुम्हे चुरा लिया
और तेरे संग मेरा चैन भी चुरा लिया।
कितनी दी आवाज़, किन-किन से पूछा नहीं ज़नाब
पर ना आये तुम ना ही कोई जवाब।
हम तुम्हारे लिए ही तरसते हैं, और लोग हम पर ही हँसते हैं।
ऐसे तो कैसे चलेगा काम? कुछ तो अब करना होगा इंतजाम
चलती हूँ मैं बाज़ार में, आईफोन है मेरे दिमाग में।।

दिनकर और दीवाली

हे दिनकर, तुमको नमन कर,
पूछती हूँ एक सवाल
क्या तुमको भी है दीवाली का इंतजार?
तुमसे तो रोशन है यह जहान
तुम तो मिटाते हो
तम का नामोनिशान
फिर क्यूँ है तुमको दीपों का इंतज़ार
क्या तुम्हारे भीतर है कोई घना अंधकार?
जिसको है इक दीप का इंतजार
जो मिटा दे तुम्हारे मन का अँधेरा
और जगा दे दिल में इक नया सवेरा।
तुम्हारे सवाल का देता हूँ मैं जवाब
हाँ मुझको भी है दीवाली का इंजजार
क्यूंकि
ये चाँद मेरी ही रोशनी से तो जगमगाता है
और धरती पर रातों को बहुत इठलाता है
रोज-रोज अपनी कलाएँ दिखलाता है
दीवाली पर मैं इसको ये बतलाता हूँ
तेरे बिन भी देख धरती जगमगाती है
तेरी रोशनी की कमी कहीं नज़र नहीं आती है
तुमसे सुंदर है इन दीपों का उजियार
इसलिए करता हूँ दीवाली का इंतजार।

मकर संक्राति

आसमान में उड़ती पतंग,
लहराती बलखाती पतंग,
ज्यों ज्यों पतंग ऊपर जाए,
त्यों त्यों उमंग बढ़ती जाए।
हर छत पर उड़ती एक पतंग,
हर छत पर खड़ा परिवार संग,
दो चार नहीं दस-दस संग,
मिल कर उड़ाते एक पतंग।
कोई कहता लाल को काटो,
कोई कहता हरी को काटो,
ज्यों ही लड़ाया लाल से पेच,
साँसे हो गई सबकी तेज,
काट दी हमने लाल पतंग,
मिल कर चिल्लाये सारे संग,
काटा है काटा है।
कितना प्यारा है त्यौहार,
एक दूजे की काटकर
जश्न मना रहे मिलकर यार।
तरह तरह के तिल के व्यंजन,
खा रहे हैं सारे जन,
करो आज तुम खुल कर दान,
प्रभु देंगे तुमको वरदान।

होली

मन ही मन मैं जिनकी होली
खेलूँगी मैं उन संग होली
गुलाल, अबीर और पक्का रंग
रंग दूँगी पिया को सारे रंग।
सखी लगा ना मुझ पर रंग
खेलूँगी रंग बस उनके संग।
चढ़ा है मुझ पर प्रीत का रंग
ना छूटे यह सतरंगी रंग।
रंग चुकी मैं अब उनके रंग
दूजे रंग अब लगते बेरंग।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - श्रीमती कविता अग्रवाल

जन्म - 29 सितम्बर 1970

शिक्षा - एम.एस.सी. (भौतिक विज्ञान), एम.फिल

पता - 4, खनिज नगर, आदर्श नगर, अजमेर

मो.नं. - 9462584162

ई मेल - kavitaajmer@yahoo.com

सम्प्रति - प्रवक्ता, राजकीय महिला पॉलिटेक्निक महाविद्यालय, अजमेर

प्रकाशन - अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय जर्नल्स में शोध-पत्र प्रकाशित

सम्मान - स्वर्ण पदक (विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन की एम.एस.सी. की परीक्षा में प्रावीण्य सूची में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर)

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

Women आवाज़ आधी आबादी की गूँज... www.WomenAawaz.com

अन्तरा शब्दशक्ति www.antrashabdshakti.com

978-93-88102-61-2

मूल्य 40/-

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१, संपर्क– ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com